



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
भारत मौसम विज्ञान विभाग
चंद्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कानपुर, उत्तर प्रदेश



मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक : 26-09-2025

हरदोई(उत्तर प्रदेश) के मौसम का पूर्वानुमान - जारी करनेका दिन :2025-09-26 (अगले 5 दिनों के 8:30 IST तक वैध)

मौसम कारक	2025-09-27	2025-09-28	2025-09-29	2025-09-30	2025-10-01
वर्षा (मिमी)	0.0	1.0	1.0	3.0	4.0
अधिकतम तापमान(से.)	36.0	35.0	35.0	34.0	33.0
न्यूनतम तापमान(से.)	27.0	28.0	26.0	26.0	25.0
अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	79	82	84	84	84
न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	61	62	62	65	60
हवा की गति (किमी प्रति घंटा)	5	8	9	7	5
पवन दिशा (डिग्री)	21	75	85	93	94
क्लाउड कवर (ओक्टा)	1	2	3	4	4
चेतावनी	कोई चेतावनी नहीं	कोई चेतावनी नहीं	कोई चेतावनी नहीं	कोई चेतावनी नहीं	कोई चेतावनी नहीं

पूर्वानुमान सारांश:

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार, आगामी पाँच दिनों में हल्के से मध्यम बादल छाए रहने के कारण दिनांक 28 सितम्बर से 01 अक्टूबर, 2025 के मध्य स्थानीय स्तर पर गरज-चमक के साथ हल्की वर्षा होने की संभावना है। अधिकतम तापमान 33.0-36.0°C के मध्य रहेगा, जो सामान्य से 1-2°C अधिक रहने की संभावना है तथा न्यूनतम तापमान 25.0-28.0°C के मध्य रहेगा, जो सामान्य से 2-3°C अधिक रहने की संभावना है। सापेक्षिक आर्द्रता का अधिकतम एवं न्यूनतम स्तर 79-84% तथा 60-65% के मध्य रहेगा। हवा की दिशा उत्तर-पूर्व रहेगी तथा गति 5.0-9.0 किमी/घंटा रहेगी, तथा हवा की गति सामान्य से 4-5 किमी/घंटा रहने की संभावना है।

मौसम चेतावनियाँ (अगले दिन के 08:30 IST तक मान्य):

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार 28 सितम्बर से 01 अक्टूबर, 2025 तक गरज-चमक के साथ हल्की वर्षा होने तथा बिजली गिरने की चेतावनी है।

मौसम चेतावनियों के कृषि पर संभावित प्रभाव और संबंधित एग्रोमेट सलाह:

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे वर्षा की सम्भावना को देखते हुए सिचाई एवं बुवाई का कार्य स्थगित रखें। खेत में परिपक्व फसलों की कटाई/मड़ाई कर दानो को सुरक्षित स्थान पर रखें। कटी हुई फसल को खेत में ऊंचे स्थान पर एकत्र कर पॉलीथीन शीट से ढक दें। वर्षा के बाद फसल को धूप में अच्छी तरह सुखाकर मड़ाई करनी चाहिए। पशुओं को खुले स्थान पर न बांधें और न ही उन्हें चरने के लिए बाहर छोड़ें तथा जल भराव वाले स्थान पर पशुओं न जाने दें।

सामान्य सलाहकार:

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे वर्षा की सम्भावना को देखते हुए सिचाई एवं बुवाई का कार्य स्थगित रखें। वर्षा की सम्भावना को देखते हुए परिपक्व फसलों की कटाई एवं मड़ाई का कार्य अति शीघ्र पूरा करें। लंपी वायरस के लक्षण - (• पशु के शरीर का तापमान 106 डिग्री फारेनहाइट होना। पशु को कम भूख लगना। • पशु के चेहरे, गर्दन, थूथन, पलकों समेत पूरे शरीर में गोल उभरी हुई गांठें, पैरों में सूजन, लंगड़ापन, नर पशु में काम करने की क्षमता कम हो जाना।) लंपी वायरस बचाव के उपाय : (• लंपी रोग से प्रभावित पशुओं को अलग रखें। मक्खी, मच्छर, जूं आदि को मार दें। पशु की मृत्यु होने पर शव को खुला न छोड़ें। पूरे क्षेत्र में कीटाणुनाशक दवाओं का छिड़काव करें। • इस रोग से प्रभावित पशुओं में बकरी पॉक्स वैक्सीन का उपयोग चिकित्सक के निर्देश पर कर सकते हैं। प्रभावित पशु की इम्युनिटी बढ़ाने के लिए मल्टी विटामिन जैसी दवाएं दी जा सकती हैं। साथ ही संक्रमण की रोकथाम हेतु टीकाकरण अवश्य करावें।)

लघु संदेश सलाहकार:

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे वर्षा की सम्भावना को देखते हुए सिचाई एवं बुवाई का कार्य स्थगित रखें। वर्षा की सम्भावना को देखते हुए परिपक्व फसलों की कटाई एवं मड़ाई का कार्य अति शीघ्र पूरा करें।

फसल विशिष्ट सलाह:

फसल	फसल विशिष्ट सलाह
चावल	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे वर्षा की सम्भावना को देखते हुए सिचाई एवं बुवाई का कार्य स्थगित रखें। धान की फसल बालियाँ निकलने तथा फूल खिलने /दुग्धावस्था की अवस्था पर चल रही है जो नमी की कमी के प्रति संवेदनशील हैं अतः बारिश न होने दशा में आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई कर उचित नमी बनायें रखें। वर्तमान मौसम कीटों के लिए अनुकूल है अतः धान की फसल में फूल आने के बाद औसतन 2 - 3 गन्धी कीट /हिल दिखाई दे तो इसके नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 % एस.एल. की 350 मिली/हेक्टेयर या बुरफोजिन 25 % एस.पी. 750 मिली/हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव साफ मौसम पर करें। धान की फसल में तना छेदक कीट का प्रकोप दिखाई दे तो इसके नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 ई.सी. एस.एल. 25 ग्राम/हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव साफ मौसम में करें।
मक्का	वर्षा की सम्भावना को देखते हुए परिपक्व फसलों की कटाई एवं मड़ाई का कार्य अति शीघ्र पूरा करें। मक्के की फसल की परिपक्व भुट्टों की तुड़ाई 75 प्रतिशत सुनहरे रंग की दिखाई देने पर भुट्टों की तुड़ाई कर धूप में अच्छी तरह सुखाकर हाथ या मशीन द्वारा दाने को भुट्टों से अलग करें।
तिल	वर्षा की सम्भावना को देखते हुए परिपक्व फसलों की कटाई एवं मड़ाई का कार्य अति शीघ्र पूरा करें। तिल की फसल में फली की सूण्डी कीट का प्रकोप दिखाई देने की संभावना है अतः इसके रोकथाम हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 % एस.जी. 200 ग्राम/हेक्टेयर या क्यूनालफास 25% ई.सी. 1.25 लीटर/हेक्टेयर की दर से 600-700 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव साफ मौसम पर करें।
मूँगफली	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे वर्षा की सम्भावना को देखते हुए सिचाई का कार्य स्थगित रखें। मूँगफली की फसलों में फलियाँ बनते समय हल्की सिचाई कर खेतों में पर्याप्त नमी बनाये रखें। मूँगफली की फसल में सफेद गिडार/दीमक कीट का प्रकोप दिखाई देने की संभावना है अतः इसके रोकथाम हेतु फिप्रोनिल 0.3 % जी.आर. 20 किलोग्राम/हेक्टेयर की दर से बुरकाव करें।
काला चना	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे वर्षा की सम्भावना को देखते हुए सिचाई का कार्य स्थगित रखें। उर्द/मूँग की खड़ी फसलों में फली छेदक कीट की सूड़ियाँ, जो फली के अन्दर छेद करके दानों को खाती हैं, इसके रोकथाम के लिए साइपरमेथ्रीन 10 ई.सी. 750 मिली मात्रा का प्रति हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव साफ मौसम में करें।
रेपसीड	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे वर्षा की सम्भावना को देखते हुए बुवाई का कार्य स्थगित रखें। तोरिया की संस्तुति जातियाँ- टा-36, टा-9 भवानी, पी.टी.-303, पी.टी.-30 आदि में से किसी एक प्रजाति की बुवाई के लिए 3-4 किलोग्राम बीज/हेक्टेयर की दर से खाद एवं बीज की व्यवस्था कर बुवाई का कार्य करें।
गन्ना	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे वर्षा की सम्भावना को देखते हुए सिचाई का कार्य स्थगित रखें। यदि गन्ने की लंबाई पाँच फुट हो गई हो तो ढाई फुट की ऊँचाई पर प्रथम बँधाई करें। प्रथम बँधाई हेतु गन्ने को लाइनों में एक लाइन के दो झुण्डों को एक साथ नीचे की सूखी पत्तियों से बँधाई करें। लालसड़न रोग से प्रभावित पौधों को जड़ सहित निकालकर नष्ट कर दें तथा थायोफिनेट मिथाइल 0.2 प्रतिशत के घोल से पौधों पर छिड़काव करें। गन्ने की फसल में बैक्टीरियल रॉट बीमारी के लक्षण दिखने पर संक्रमित पौधे को

फ़सल	फ़सल विशिष्ट सलाह
	काटकर नष्ट कर दें तथा इसके नियंत्रण हेतु स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 0.01 प्रतिशत का छिड़काव मौसम अनुकूल होने पर करें।

बागवानी विशिष्ट सलाह:

बागवानी	बागवानी विशिष्ट सलाह
आलू	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे वर्षा की सम्भावना को देखते हुए बुवाई का कार्य स्थगित रखें। आलू की अगेती किस्मों जैसे कुफरी चंद्र मुखी तथा कुफरी अशोका की बुवाई प्रारम्भ करें। बुआई के 7-10 दिन पहले शीत भण्डार से आलू के बीज को बाहर निकालें। शीत भण्डारण में भण्डारित बीज में यदि अंकुर निकल आये तो उनको छाँटकर अलग कर दें। यदि शीत गृह में भण्डारण करने से पूर्व आलू के बीज को उपचारित न किया गया हो तो शीतगृह से आलू निकालकर छाँटने के तुरन्त बाद आलू के कन्दों को बोरिक एसिड के 3 प्रतिशत घोल से 30 मिनट तक उपचारित करके छायादार स्थान में सूखा लें।
गोभी	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे वर्षा की सम्भावना को देखते हुए सिचाई एवं बुवाई का कार्य स्थगित रखें। मूली, गाजर, चुकन्दर, शलजम एवं पत्तेदार सब्जियों की मेड़ों पर बुवाई करें। खरीफ में रोपी जाने वाली सब्जियों जैसे- बैंगन, मिर्च, टमाटर और अगेती फूलगोभी आदि फसलों की तैयार पौध की रोपाई करें। यदि खेत में पानी रुकने की संभावना है तो अगेती फूलगोभी, बैंगन, टमाटर, मिर्च आदि की रोपाई मेड़ों पर करें। सब्जियों की फसलों में फल छेदक / पत्ती छेदक कीट का प्रकोप दिखाई दे रहे हो तो इसके नियंत्रण हेतु नीम आयल की १.५ मिली/लीटर पानी में घोल बनाकर 3-4 छिड़काव 8-10 दिन के अंतराल पर आसमान साफ होने पर करें।
अमरूद	आम, अमरूद, आँवला, नीबू आदि फलों के पौधों की रोपाई शीघ्र पूरा करने का प्रयास करें। नए बागों में नष्ट हुए पौधों के स्थान पर नए पौधों की रोपाई करें। केले/पपीते के बागों की गुड़ाई-करके तने के चारों तरफ 25-३० सेंटीमीटर ऊंची मिटटी चढ़ा दे स्टेंडिंग करें। आम में पत्ती कटाने वाले कीट की रोकथाम हेतु २%कार्बेरिल 1.5 % धूल का बुरकाव आसमान साफ होने पर करें।

पशुपालन विशिष्ट सलाह:

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
भैंस	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे बरसात के मौसम में पशुओं में किलनी/जू के संक्रमण की संभावना प्रबल हो जाती है। इसके बचाव हेतु पशु बाड़े में चूने का छिड़काव करें ताकि किलनी/जू के अंडे व लार्वा नष्ट हो जाय। पशुओं को वर्षा के दौरान खुले स्थान/पेड़ के नीचे न बांधें। पशुओं को रात के समय आसमान साफ होने पर ही खुले में बांधें। पशुओं को दिन के समय छायेदार स्थान पर बांधें। पशुओं को तालाबों या अन्य जगह के रुके हुए पानी को न पिलाये, इससे पशुओं को लीवर फ्लू व पेट के कीड़े होने की संभावना रहती है। पशुओं के पेट में कीड़ों की रोकथाम हेतु कृमिनाशक दवा देने का सर्वोत्तम समय है। पशुओं को हरे और सूखे चारे के साथ पर्याप्त मात्रा में अनाज दें। पशुओं को साफ एवं ताजा पानी दिन में 3 -4 बार अवश्य पिलायें। गर्भित पशुओं को ढलान वाले स्थान पर न बांधें। पशुओं को पेट में कीड़ी की रोकथाम के लिए कृमिनाशक दवा देने का उचित समय है।

मुर्गी पालन विशिष्ट सलाह:

मुर्गी पालन	मुर्गी पालन विशिष्ट सलाह
मुर्गी	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे मुर्गियों के रहने के स्थान पर प्रति दिन सफाई करें। मुर्गियों को स्वच्छ पानी तथा सन्तुलित आहार की व्यवस्था करें। अंडे के लिए नये चूजें द्वारा मुर्गियों को पालने के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है परंतु ब्रायलर मुर्गियों के लिए यह समय उपयुक्त है। मुर्गियों को भोजन में पूरक आहार, विटामिन और ऊर्जा खाद्य सामग्री मिलाएं और साथ ही साथ कैल्शियम सामग्री भी मुर्गियों को दें। पानी का क्लोरीनेशन अवश्य करें। मुर्गियों के पेट में कीड़ों के मारने के लिए (डिडिर्मिंग) की दवा दें। मुर्गीखाने को सूखा रखें तथा बिछावन को पलटते रहें। मुर्गीखाने में अधिक नमी हो तो पंखा चलायें।

मौसम चेतावनियों के संभावित प्रभाव (सामान्य):

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार 28 सितम्बर से 01 अक्टूबर, 2025 तक गरज-चमक के साथ हल्की वर्षा होने तथा बिजली गिरने की चेतावनी है।
--

प्रभाव आधारित सलाह (सामान्य):

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे वर्षा की सम्भावना को देखते हुए सिचाई एवं बुवाई का कार्य स्थगित रखें। खेत में परिपक्व फसलों की कटाई/मड़ाई कर दानो को सुरक्षित स्थान पर रखें। कटी हुई फसल को खेत में ऊंचे स्थान पर एकत्र कर पॉलीथीन शीट से ढक दें। वर्षा के बाद फसल को धूप में अच्छी तरह सुखाकर मड़ाई करनी चाहिए। पशुओं को खुले स्थान पर न बांधें और न ही उन्हें चरने के लिए बाहर छोड़ें तथा जल भराव वाले स्थान पर पशुओं न जाने दें।